उत्तर प्रदेश में कृषि और महिला समाज

डॉ0 सुनील कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग
श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर
महाविद्यालय भुड़कुड़ा गाजीपुर

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ लगभग 55% से अधिक जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। उत्तर प्रदेश, जिसे 'भारत का अन्न भंडार' भी कहा जाता है, कृषि उत्पादन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य है। गंगा–यमुना की उपजाऊ मिट्टी और समृद्ध जल संसाधन यहाँ की कृषि को समृद्ध बनाते हैं। लेकिन इस कृषि प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण, परंतु अक्सर उपेक्षित हिस्सा महिलाएँ हैं। यह लेख उत्तर प्रदेश में कृषि और महिला समाज की भूमिका, चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं पर केंद्रित है।

कृषि में महिला की भूमिका-

1.बीज प्रबंधन और रोपाई – परंपरागत रूप से महिलाएँ बीज चयन और संग्रह का कार्य करती रही हैं। धान और सब्ज़ियों की रोपाई में उनका श्रम अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

2.खरपतवार एवं सिंचाई कार्य– खेत की निराई–गुड़ाई तथा सिंचाई की व्यवस्था में महिलाओं की मेहनत ही खेती को टिकाऊ बनाए रखती है।

3.कटाई–मड़ाई और भंडारण – गेहूँ, धान, दालों तथा तिलहन की कटाई और मड़ाई में महिलाएँ अग्रणी भूमिका निभाती हैं। अनाज को सुरक्षित रखने हेतु परंपरागत भंडारण विधियों की विशेषज्ञता भी उनके पास होती है।

4.पशुपालन और दुग्ध उत्पादन– उत्तर प्रदेश के ग्रामीण समाज में महिलाएँ दुग्ध उत्पादन की आधारशिला हैं। वे चारे की व्यवस्था, दुहाई, दूध का विपणन और घरेलू उपयोग तक जिम्मेदारी संभालती हैं।

5.घरेलू-कृषि समन्वय– महिलाएँ कृषि कार्य के साथ-साथ परिवार का पोषण भी करती हैं। सब्ज़ी उत्पादन, रसोई, बागवानी और खाद्य प्रसंस्करण में भी उनका अतुलनीय योगदान रहता है।

उत्तर प्रदेश में महिला समाज और कृषि की चुनौतियाँ-

1.भूमि स्वामित्व का अभाव– अधिकांश महिलाओं के पास खेती की ज़मीन का स्वामित्व नहीं होता। इससे उन्हें बैंक ऋण, सरकारी योजनाओं और तकनीकी सहयोग का लाभ नहीं मिल पाता।

2. तकनीकी ज्ञान की कमी– आधुनिक कृषि उपकरणों और तकनीकी जानकारी तक महिलाओं की पहुँच सीमित है।

3.सामाजिक बाधाएँ– ग्रामीण समाज में अभी भी महिलाओं को स्वतः निर्णय लेने की प्रक्रिया में पर्याप्त स्थान नहीं मिलता।

4.आर्थिक असमानता– महिलाओं के श्रम को अदृश्य मानकर अक्सर उन्हें उचित मजदूरी नहीं दी जाती।

5.श्रम का दोहरा बोझ – कृषि कार्य के साथ-साथ घरेलू कामकाज की जिम्मेदारी भी उन्हीं पर होती है।

महिला सशक्तिकरण और कृषि विकास-

उत्तर प्रदेश में कृषि और महिला समाज को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। दोनों का विकास परस्पर जुड़ा हुआ है। महिलाओं के सशक्तिकरण से कृषि उत्पादन की गुणवत्ता और मात्रा दोनों बढ़ सकती है।

1.स्वयं सहायता समूह (SHG)– उत्तर प्रदेश में स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को संगठित कर आर्थिक

रूप से सक्षम बनाया है। कई स्थानों पर महिलाएँ दुग्ध समितियों, सब्ज़ी उत्पादन एवं हस्तशिल्प से जुड़े कार्यों के माध्यम से आत्मनिर्भर बनी हैं।

2.सरकारी योजनाएँ – प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड जैसी योजनाओं ने महिलाओं को कृषि क्षेत्र में अवसर प्रदान किए हैं।

3.कृषि-प्रशिक्षण कार्यक्रम– कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) तथा ग्रामीण विस्तार सेवाएँ महिलाओं को आधुनिक खेती, जैविक खेती और प्रसंस्करण तकनीक में प्रशिक्षित कर रही हैं।

4.शिक्षा और जागरूकता– ग्रामीण शिक्षा और महिला साक्षरता बढ़ने से कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हो रहा है।

5.उद्यमिता विकास– महिलाओं ने खाद्य प्रसंस्करण, दुग्ध उत्पाद, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन और सिलाई–बुनाई जैसे कृषि–आधारित उद्यमों में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश का विशेष संदर्भ -

पूर्वी उत्तर प्रदेश (गोरखपुर, आज़मगढ़, गाज़ीपुर, बलिया, देवरिया आदि) में कृषि जीवन का प्रमुख आधार है। यहाँ की महिलाएँ परंपरागत धान और गेहूँ की खेती के साथ-साथ सब्ज़ी उत्पादन और पशुपालन में सक्रिय रहती हैं। गंगा–घाघरा की उपजाऊ भूमि और प्रवासी पुरुष श्रमिकों की अनुपस्थिति ने महिलाओं की कृषि भूमिका को और अधिक प्रमुख बना दिया है। कई शोध अध्ययनों में पाया गया है कि प्रवासन के कारण खेतों और पशुधन की जिम्मेदारी महिलाओं के कंधों पर अधिक आ गई है, जिससे उनका श्रम और आर्थिक योगदान बढ़ा है।

भावी दिशा -

1.भूमि अधिकार सुनिश्चित करना – महिलाओं को भूमि स्वामित्व देने से उनकी स्थिति मज़बूत होगी।

2. तकनीकी पहुँच बढ़ाना – आधुनिक कृषि यंत्र, प्रशिक्षण और बाजार तक महिलाओं की सीधी पहुँच होनी चाहिए।

3.संगठन और सहकारी समितियाँ– महिला सहकारी समितियों के माध्यम से उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन को बढ़ावा देना चाहिए।

4.डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग– ई-नाम, ई-मार्केट, डिजिटल पेमेंट और मोबाइल ऐप्स के माध्यम से महिलाएँ सीधे कृषि बाजार से जुड़ सकती हैं।

5.समान मजदूरी और सामाजिक मान्यता– महिला श्रम को उचित मूल्य और सामाजिक सम्मान दिया जाना आवश्यक है।

निष्कर्ष - उत्तर प्रदेश में कृषि और महिला समाज का रिश्ता केवल श्रम तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक परंपरा का हिस्सा है। महिलाएँ कृषि उत्पादन की रीढ़ हैं, किंतु उन्हें अभी भी समान अधिकार और मान्यता की आवश्यकता है। यदि महिला समाज को शिक्षा, तकनीक, भूमि अधिकार और संगठन का सहयोग मिले तो न केवल उत्तर प्रदेश की कृषि बल्कि सम्पूर्ण ग्रामीण विकास का भविष्य उज्ज्वल होगा।

संदर्भ -

1.कृषि मंत्रालय, भारत सरकार, 2023 की कृषि रिपोर्ट।

2.राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) – महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना, 2022।

3.चौधरी, अशोक (2021) – भारतीय कृषि और महिला योगदान, प्रयागराज विश्वविद्यालय प्रकाशन।

4.सिंह, अर्चना (2020) – उत्तर प्रदेश में महिला और ग्रामीण अर्थव्यवस्था, लखनऊः गंगाप्रकाशन।

5. उत्तर प्रदेश सरकार – आर्थिक सर्वेक्षण, 2022-23।

***